10. आपदा प्रबंधन

- आपदा
- आपदाओं का स्वरूप तथा विस्तार
- आपदा प्रबंधन प्राधिकरण संरचना
- अभिरूप अध्ययन
- आपदाओं के प्रकार
- आपदाओं के परिणाम
- आपदा प्रबंधन
- प्रथमोपचार तथा आपातकालिन कृती

थोडा याद कीजिए

1. आपदा किसे कहते है ?
2. आपके परिसर में घटित कौन-सी आपदाओं का अनुभव आपने किया है ?
3. इन आपदाओं का स्थानिक तथा आसपास की स्थिती पर कौन-से परिणाम हुए हैं?

आपदा (Disaster)

पर्यावरण में बहुधा कुछ भयंकर धोकादायक घटनाएँ घटित होती हैं उन्हें आपदा कहते है । नदियों में आने वाली, बाढ़, सूखा-गीला अकाल, तूफान, भूकंप, ज्वालामुखी यह कुछ प्रमुख प्राकृतिक आपदाएँ है । यह मानव पर अचानक आने वाले संकट हैं । इन घटनाओं के कारण पर्यावरण में आकस्मिक परिवर्तन होते हैं तथा इन विध्वंसक घटनांओं से पर्यावरण को हानि पहूँचती है ।

पर्यावरण के संसाधनों का उपयोग अपने विकास के लिए करते समय भी पर्यावरण को हानि पहुँचती है । इसी से अचानक व मानव को अनजान ऐसी कुछ आपदाएँ घटित होती है । उन्हें मानव निर्मित आपदा कह सकते हैं ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने "आपदा अर्थात ऐसी घटना जिसके कारण आकस्मिक रुप से अत्यधिक जनहानि तथा अन्य प्रकार की हानि होती है ।" इस प्रकार आपदा की परिभाषा की है । इनमें अचानक तथा प्रचंड ये शब्द महत्त्वपूर्ण है । आपदाएँ आकस्मिक रुप से आती है इसी कारण उसका पहलेसेही अनुमान नहीं लगाया जा सकता है इसलिए सावधानी नही ले पाते। जिस स्थान पर आपदाएँ आती हैं उस क्षेत्र की साधनसंपत्तीयों का अत्यधिक नुकसान होता है । वित्तीय तथा जनहानी जैसे घटनाओं का समाज पर दीर्घकालिक परिणाम होता है । यह परिणाम वित्तिय, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय, कानूनी तथा प्रशासकीय ऐसे सभी क्षेत्रों में होता है । जिस क्षेत्र में आपदाएँ आती हैं वहाँ का जनजीवन तहस-नहस हो जाता है । आपदाग्रस्त व्यक्तियों को जन-धन तथा अन्य प्रकार की हानि होती है ।

पिछली कक्षा में हमने विभिन्न प्रकार की आपदाएँ और उनके उपाय संबंधी जानकारी प्राप्त की है । कोई भी दो आपदाएँ समान नहीं होती है । प्रत्येक आपदा का कालखंड अलग- अलग होता है । कुछ आपदाएँ अल्पकालिक तथा कुछ दीर्घकालिक होती है । प्रत्येक आपदा के घटित होने के कारण भी भिन्न-भिन्न होता है । पर्यावरण पर आपदाओं का निश्चित कौन-से घटकों पर अधिक परिणाम होने वाला है यह उस आपदा के स्वरूप से दिखाई देता है ।

बताइए तो !

आपदाओं के दो मुख्य प्रकार कौन-से हैं ?

हमने पिछली कक्षा में विभिन्न प्रकार के आपदाओं से होने वाले परिणाम और आपदा आने के पश्चात ली जाने वाली सावधानियाँ इससे संबंधित जानकारी प्राप्त की है । आपदाओं का इस प्रकार भी वर्गीकरण किया जा सकता है जैसे प्रलयकारी आपदा उदा. निरंतर आने वाले उडीसा के चक्रीय तूफान, गुजरात का प्रलयकारी भूकंप तथा लातूर का भूकंप तथा निरंतर रूप से आंध्र के तट पर हर साल मंड़राने वाले चक्रीय तूफान इन कारणों ने इन भागों में तहलका मचाया है, बड़े पैमाने पर जन-धन हानि हुई है, फिर भी सामान्य जनजीवन कुछ समय बाद सुचारु रूप से शुरु हुआ । दूरकालिक परिणाम वाली आपदाएँ अर्थात घटनाओं के पश्चात उनका दुष्परिणाम गंभीर होता है । उदा. अकाल , फसलों का नुकसान, कर्मचारियों की हड़ताल, बढ़ने वाला समुद्री जल स्तर, बंजर रेगिस्तानीय भूमि आदि ।

चर्चा कीजिए

नीचे दिए गए चित्र का निरीक्षण कीजिए। आपदाओं की घटना के स्थान आपके परिचित है, इन आपदाओं के कारण जनजीवन पर हुए परिणामों की चर्चा कीजिए। इन आपदाओं से कैसे बचाव कर सकते थे ? कक्षा में अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए।

10.1 कुछ आपदाएँ (सौजन्य : लोकमत लायब्ररी, औरंगाबाद)

इंटरनेट मेरा मित्र

आपदाओ संबंधी विभिन्न व्हिड़ीयो खोजिए। आपदाओं का पर्यावरण पर होने वाला परिणाम और उस पर उपाययोजनाओं के बारें में कक्षा में चर्चा कीजिए।

बताइए तो !

आपदाओं का विभिन्न मापदंड़ के आधार पर वर्गीकरण किस प्रकार किया जाएगा ?

आपदाओं के प्रकार

भू भौतिक (Geophysical)

- **भूवैज्ञानिक व भूगर्भीय** – उदा. भूकंप, ज्वालामुखी, सुनामी, भूप्रपात, भूमिपात, भूप्रक्षोभ, प्रस्तरभंग विदारण, धूप, क्षारीकरण, जलप्रलय
- **मौसम विभाग, वातावरणीय, खगोलशास्त्रीय** – उदा. गर्म व शीतलहर बर्फिले तुफान बर्फवृष्टी, चक्रीय तुफान, ओले, अवर्षण, अकाल, बाढ़, उल्कापात, सूर्यपर स्थित दाग और उनकी संख्या में परिवर्तन इत्यादी

जैविक (Biological)

- **वनस्पतीजन्य** – उदा. जंगल दावानल, कवक जन्यरोग प्रसारण (फफोला) तणफैलाव (जलपर्णी, कॉंग्रेस घाँस घाँस)
- **प्राणीजन्य** – उदा. संसर्गजन्य विषाणू, जीवाणू (हैता, विषमज्वर, पीलिया, प्लेग रोगजंतू कीटक, विषैले प्राणिया दंश, टिड्डीदल आक्रमण, जंगली जानवर का हमला

मानवनिर्मित (Man Made)

- **अनाकलनीय** – उदा. विषैली गैस का रिझान, परमाणु परिक्षण, अनियोजित क्रिया अपघात.
- **हेतुपुरस्सर** – उदा. युद्ध, आग, बॉम्बस्फोट, जबरदस्ती किए स्थलांतर, दहशतवाद, बलात्कार, बालमजदूर

थोड़े आठवा.

1. बाढ के विध्वंसक परिणाम कौन-से होते हैं?
2. शुष्क सुखा आने से कौन से परिणाम होते हैं?
3. भूकंप के विध्वंसक परिणाम कौन-से हैं?
4. दावानल क्या है? उसका पर्यावरण पर क्या परिणाम होता है?

आपदाओं का परिणाम (Effects of disaster)

उपरोक्त प्रश्नों के अनुसार हमने आपदाओं के गंभीर परिणाम के विषय मे जानकारी प्राप्त की है । बाढ़ में यातायात के पुल का बह जाना, नदियों के तट पर स्थित गाँवों में पानी घुसना, भोजन की कमी का निर्माण होना ऐसी समस्याओं का निर्माण होना और भूकंप में घरों का तहस-नहस होना, जमीन में दरारे पड़ना, ऐसे परिणाम दिखाई देते है । दावानल, अकाल इन आपदाओं का भी पर्यावरण पर बहुत गंभीर परिणाम होता है । परंतु ये आपदाएँ निश्चित कौन से स्वरूप की होती है? आपदाएँ आने के पहले प्राकृतिक बदलाव होते है क्या? आपदाएँ आने के बाद उनका परिणाम कितने समयतक रहता हैं? कैसे? इस सभी का विचार करना अत्यंत आवश्यक होता है । इस कारण हमें आपदाओं का स्वरूप तथा विस्तार की कल्पना आती है ।

देश की वित्तव्यवस्था पर आपदाओं के कारण निश्चित रूप से परिणाम होता है । परंतु वह आपदा और वित्तव्यवस्था के सापेक्ष होता है अर्थात बंदरगाह नष्ट होते हैं तो उसके नव निर्माण पर अधिक निधी खर्च होने पर उसका वित्तव्यवस्था पर दूरकालिक परिणाम होता है । आपदाओं का सामाजिक नेतृत्व पर परिणाम अर्थात किसी आपदा में स्थानिक नेतृत्व प्रभावी नहीं है तो वहाँ के नागरीक दिशाहीन बन जाते हैं । इसका परिणाम उनके कार्यालय के कामकाज पर होता है । आपदाकाल में प्रशासकीय कठिनाईयाँ निर्मित होती है । स्थानिक स्वराज्य संस्थानों को आपदाओं के कारण हानि पहूँचे तो उसके अनुसार उनके अतंर्गत अन्य विभाग भी इन आपदाओं का सक्षम रूप से सामना नहीं कर सकते है । इससे संबंधित सभी विभागों को आपदाओं से नुकसान होता है तथा वहाँ की व्यवस्था डगमगा जाती है ।

विचार कीजिए

ऐसी कल्पना करो की विद्यालय अथवा मैदानों पर खेलते समय दुर्घटना जैसी कोई आपदा आई तो उसका आप पर और आसपास के वातावरण पर क्या परिणाम होगा ?

तालिका तैयार कीजिए

आपदाएँ आने के बाद विभिन्न प्रकार की समस्याओं का निर्माण होता है । नीचे दिए गए संकलित चित्र में कुछ परिणाम दिए हैं उन्हें पढ़कर अन्य परिणामों के संबंध जानकारी रिक्त स्थानों में लिखिए ।

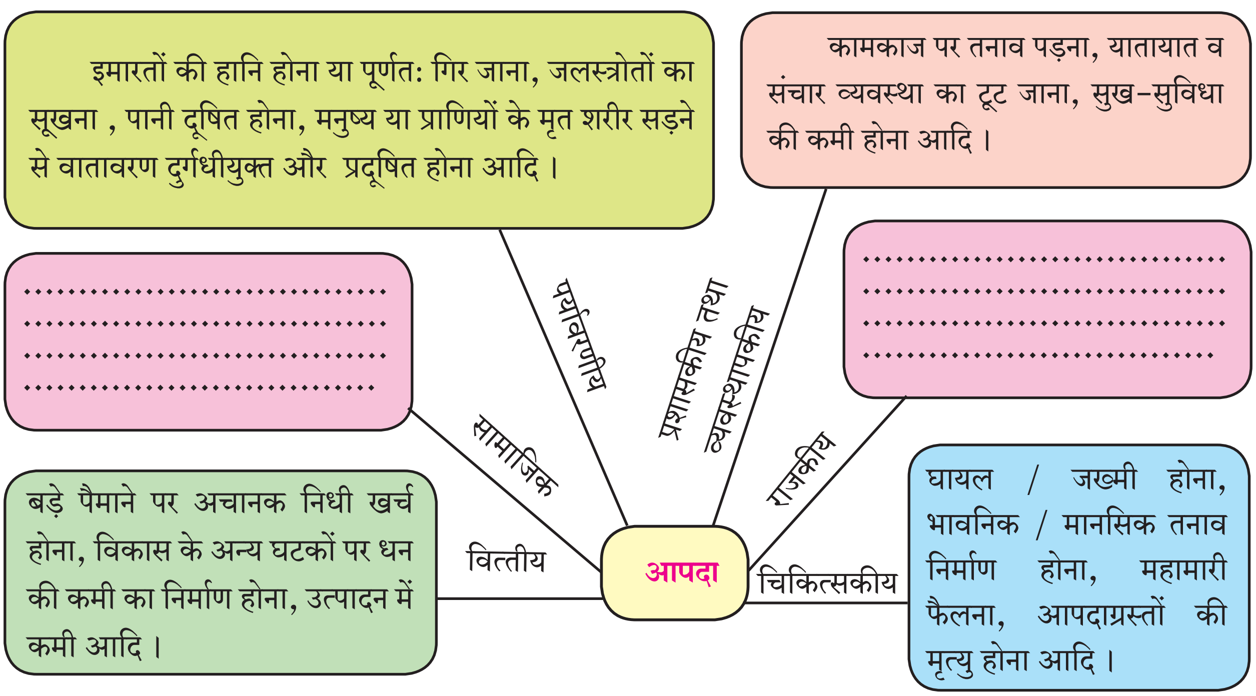

थोड़ा सोचिए ।

उपरोक्त दी गई जानकारी के आधार पर ‘‘ रेल दुर्घटना’’ इस आपदा के विभिन्न परिणाम स्पष्ट कीजिए।

आपदाओं का स्वरूप और विस्तार (Nature and scope of disaster)

आपदाओं के विस्तार पर विचार करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना पड़ता है वो इस प्रकार है ।

1. आपदा के पहले का समय (Pre-disaster phase)
2. संकेत समय (Warning phase)
3. आपातकालीन काल (Emergency phase)
4. पुनर्वसन काल (Rehabilitation phase)
5. प्रतिशोधन का काल (Recovery Phase)
6. पुन: निर्माण का काल (Reconstruction phase)

विचार कीजिए

महाबाढ़ इस आपदा का स्वरुप और व्याप्ती के उपरोक्त भागों के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

आपदाओं के स्वरूप और विस्तार का पूर्णत: विचार किया जाए तो आम आदमी की दृष्टि से आपदाओं के तीन भाग संवेदनशील होते है ।

1. **आपातकालीन स्थिती** : इस स्थिती की विशेषता अर्थात इसी समय अधिक वेग से प्रयास करके हम अधिक से अधिक लोगों के प्राण बचा सकते हैं उसी में खोज और बचाव कार्य, चिकित्सकीय मदद, प्रथमोपचार, संपर्क और संचार व्यवस्था पूर्ववत करना, खतरेवाले क्षेत्र से नागरिकों का स्थलांतर करना ऐसी और अन्य कृतियों की अपेक्षा होती है । इसी समय आपदाओं का अनुमान लगाया जाता है ।

2. **संक्रमणावस्था** : इस स्थिती में आपदा कम होने पर आपदा निवारण या पुनर्वसन का कार्य किया जाता है । जैसे ढ़ेर को हिलाना, पानी के नल ठीक करना, रास्तों की दुरूस्ती करना आदि । जिससे जनजीवन पूर्व स्थिती मे आने के लिए मदद होगी । आपदग्रस्तों के पुनर्वसन करने का कार्य यह इस योजना का महत्त्वपूर्ण अंग है । सामान्यत: ऐसे नागरिकों की अलग-अलग संस्थाएँ धन अथवा अन्य प्रकार की मदद कर सकती हैं । उन्हें स्थायी रुप से उद्योगधंदे या अन्य आमदनी के साधन उपलब्ध कराने से उनकी मानसिक परेशानीयाँ कम होने में कम से कम समय लगता है और उनका वास्तविक दृष्टि से पुनर्वसन हो सकता है ।

3. **पुनर्निर्माण अवस्था** : यह अवस्था अत्यंत कठिन स्वरूप की है । क्योंकि उसकी शुरुआत संक्रमणावस्था में होती है । इस काल में नागरिक अपनी इमारत का पुन: निर्माण, रास्ते, जल संसाधनो की व्यवस्था आदि शुरु करते हैं । कृषि व्यवसाय पूर्ववत शुरु होता है । फिर भी पुन: निर्माण का कार्य पूरा करने के लिए काफी समय लगता है ।

आज तक पृथ्वी ने अनेक प्राकृतिक आघात सहन किए हैं । उनका वर्णन सुनकर मानवी मन स्तब्ध हो जाता है । इनमें से बहुसंख्य आघात अथवा आघात से निर्माण हुई अभूतपूर्व परिस्थिती अधिक तर एशिया महाद्वीप और प्रशांत महासागर के परिसर में हुई है । ऐसे आघातों के कारण पृथ्वी और सजीवों का अतुलनीय नुकसान हुआ है ।

वास्तविक रूप से देखा जाए तो अनेक वर्षों पुरानी समस्याओ ने उग्र रूप धारण करने की शुरुआत की है जैसे बढ़ती हुई जनसंख्या, उनकी बढ़ती हुई आवश्यकताएँ इसके कारण निर्माण होने वाली समस्याएँ, उनका स्वरूप अब गंभीर अवस्था में है और दूसरे महायुद्ध के पश्चात ऐसी आपदाएँ अधिक बढ़ती गई । सामाजिक विषमता, वित्तीय विषमता आनुवांशिक तथा धार्मिक प्रथा ऐसे अनेक कारणों से देश में अशांति का वातावरण निर्माण होता है । आतंकवाद, अपहरण, सामाजिक संघर्ष ये घटनाएँ अब निरंतर घटित हो रही हैं ।

विकसित देशों में अनेक घातक रसायनों का उत्पादन करने अथवा उपयोग करने के लिए मनाई है परंतु उन्हीं विषैले या मनुष्य के विनाश का कारण होने वाले रसायनों का उत्पादन विकसित तथा अविकसित देशों में खुलेआम किया जाता है ।

क्या आप जानते हैं?

2014 में पुणे जिला की आंबेगाव तहसील में माळीण गाँव के भूस्खलन होकर कगार ढ़ह गई थी । इस आपदा के पश्चात पुन:निर्माण की गई विद्यालय की इमारत का चित्र नीचे दर्शाया गया है ।

परमाणुभट्टीयों से मनुष्य को ऐसा ही दूसरा खतरा है । उदा. रशिया में चेर्नोबिल परमाणुभट्टी में विस्फोट के कारण किरणो का रिसाव हुआ । उसके दुष्परिणाम आज भी महसूस हो रहे हैं । इस परमाणुभट्टी का उपयोग सिर्फ बिजली निर्माण के लिए किया जाता था । आज के युग में अनेक देश परमाणु संपन्न है और इनकी असावधानियों के कारण किरणोत्सर्जन का खतरा बढ़ रहा है । इन सभी कारणों से आपत्कालीन व्यवस्थापन का महत्व सभी राष्ट्रों की प्रथम आवश्यकता हो गई है । इसकी आवश्यकता जैसे सरकार को है, वैसे ही या उससे अधिक देश के नागरिकों को है, क्योंकि आपदाएँ आने पर नागरिकों को बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ता है । अतः आपत्कालीन प्रबंधन में सीधा जनसहभाग आवश्यक है । उसी प्रकार ऐसी योजनाओं मे स्थान, समय आपदाओं के अनुसार परिवर्तन करना और यह विशेष समय के लिए सीमित न रहे ऐसी अपेक्षा है । इसका अर्थ यह है की आपदा कैसी भी हो उसपर मात करना आवश्यक होता है । इसी से ही आपदा प्रबंधन संकल्पना का निर्माण हुआ है ।

आपदा प्रबंधन (Disaster management)

आपदा छोटी हो या बडी, अल्पकालिक हो या दीर्घकालिक उस पर मात करना महत्वपूर्ण होता है और उसके लिए आपदा प्रबंधन प्रभावी और परिणामकारक होना जरुरी है । जनसहभाग और आपदा प्रबंधन का रिश्ता बहुत समीप का है ।

आपदाएँ टालना, आपदाओं का सामना करने के लिए योजनाएँ तैयार करना, इसके लिए क्षमता प्राप्त करना ही आपदा प्रबंधन होता है । आपदा यह एक तीव्र प्रक्रिया अर्थात दुर्घटना होती है। ऐसी आपदाओं के समय हमें क्या करना चाहिए? स्वयं का संसाधनों का तथा प्राणियों का संरक्षण कैसे करना चाहिए ?

आपदा प्रबंधन मे आपदा आने पर प्रथम उस आपदा के कारण होनेवाला नुकसान किस प्रकार कम से कम हो इस दृष्टि से प्रयत्न करना आवश्यक है । आपदाएँ ये नियोजित नही होती परंतु योजनाबद्ध तरीके उनका निवारण किया जा सकता है ।

आपदा प्रबंधन के उद्देश्य

1. आपदाओं के समय मानवी समाज में होने वाली हानि दूर करना और इनसे लोगों को मुक्त करना ।
2. जीवनाश्यक वस्तु आपदाग्रस्त लोगों तक उचित रुप से पहुँचाकर आपदाओं की तीव्रता और आपदा के पश्चात आने-वाले दुख को कम करना ।
3. आपदाग्रस्त मानवी जीवन पुन: सुचारू रूप से शुरू करके उस प्रदेश का मानवी जीवन पूर्वस्थिती में लाना ।
4. आपदाग्रस्तों का पुनर्वसन योग्य रूप से करना ।
5. आपदाओं के संरक्षणात्मक उपायों का नियोजन करके भविष्यकाल में ऐसी आपदाओं के दुष्परिणाम नहीं होगें या आपदाएँ आई तो उसकी तीव्रता कम होगी ऐसी सावधानियाँ बरतनी चाहिए ।

आपदा प्रबंधन अर्थात वैज्ञानिक, सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा तथा सूचनाओ के पृथक्करण द्वारा आपदाओ का सामना करने की क्षमता प्राप्त करना और उन्हें समय समय पर वृद्धिंगत करना जैसे आपदा प्रतिबंधात्मक उपाययोजना निवारण व पुनर्वसन और पुर्ननिर्माण जैसे अंगो का विचार कर उनका कृती आराखडा तैयार तथा इन सभी बातो का कडाई से पालन करना अर्थात उनका व्यवस्थापन करना ।

आपदापूर्व-प्रबंधन

(Pre Disaster Management)

इसमें किसी भी प्रकार की आपदाओं का सामना करने के लिए संपूर्ण रूप तैयार होने के लिए पूर्वतैयारी करना जरूरी है । उसके के लिए प्रथम..

अ. आपदाग्रस्त अथवा आपदा प्रवृत्त/प्रवण भूभागों की पहचान कर लेना ।

आ. Predictive Intensity Maps द्वारा आपदाओं की तीव्रता और Hazards Maps द्वारा आपदाओं की संभावना होने वाले स्थानों की जानकारी प्राप्त कर लेना ।

इ. आपदा प्रबंधन के लिए विशिष्ट रूप से प्रशिक्षण लेना ।

ई. आम आदमी को भी आपदा प्रबंधन तथा निवारण की अनुभूति देना । इसके लिए सभी स्तर पर प्रशिक्षण, प्रसार व्यवस्था और जानकारी के स्त्रोत उपलब्ध कर लेना तथा अन्य लोगों को जानकारी पहुँचाना ।

आपदा-आघात के पश्चात का प्रबंधन

(Post Disaster Management)

1. आपदा आने के बाद आपदाग्रस्तों को प्राथमिक रूप से संपूर्ण मदद करना । मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना ।
2. बचे हुए स्थानिक निवासियों द्वारा ही मदद कार्यों के लिए प्राधान्य देना ।
3. आपदाओं के पश्चात बिल्कुल समय न खोते हुए एक नियंत्रण विभाग का निर्माण करना । प्रत्येक प्रकार की आपदाओं के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के नियंत्रण विभाग तैयार करने पड़ते है ।
4. नियंत्रण विभाग द्वारा आने वाले मदद का वर्गीकरण करना । ये मदद जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाने की व्यवस्था कर के मदद के कार्य का निरंतर और लगातार ध्यान देना ।
5. आपदा निवारण चौबीस घंटे कार्यक्षम व कार्यरत रखना ।

निरीक्षण कीजिए

नीचे दिए गए आपदाकालीन नियोजन चक्र का निरीक्षण करके भूकंप या आपदा से संबधित प्रत्येक भाग का स्पष्टीकरण लिखिए ।

आपदाकालीन नियोजन चक्र के मुख्य भाग

पूर्वतैयारी : कोई आपदा घटित होने पर उसके परिणाम कम से कम कैसे होगे इस दिशा में नियोजन किया जाता है ।

→ **विमोचन :** आपदा का लोगों और देश पर कम से कम परिणाम कैसे होगा ऐसी कृती का विचार किया जाता है ।

→ **सूसज्जता :** ऐसी योजना बनाई जाती है जिसमे सामान्य नागरिक और प्रशासन का प्रतिसाद प्राप्त हो ।

→ **आपदा का आघात :** यह घटक आपदा प्रबंधन और आपदा के भिन्न-भिन्न तीव्रता के सापेक्षता की जानकारी लेता है ।

→ **प्रतिसाद :** दुर्घटनाओं का प्रतिसाद तुरंत देना पडता है । यह घटक इस चक्र में आपदाओं के घटित होने के बाद आता है ।

→ **पुनरूत्थापन :** पुनरूत्थापन यह आपात्कालीन, उपाययोजनाओ और राष्ट्रीय प्रगती इनके मध्य का महत्वपूर्ण साधन है । पुनरूत्थापन यह चरण राष्ट्रहित और पुर्नवसन के लिए उपयोग किया जाता है ।

→ **पूर्ववतता :** दुर्घटना के बाद जब जनसेवा तहस-नहस होती है तब गाँव या शहर का संपूर्ण रूप से पुनर्वसन करने के लिए जो समय लगता है उसे पूर्ववतता कहा जाता है ।

आओ करके देखे

आपके घर / विद्यालय के संदर्भ में प्रति आपदापूर्व प्रबंधन करते समय किन किन बतों पर विचार करेंगे । शिक्षकों की मदद से एक सर्वेक्षण रिपोर्ट बनाइए ।

इसे सदैव ध्यान में रखिए

प्राकृतिक आपदाओं को टालना असंभव होता है परंतु इस कारण होने वाली हानि व उनका परिणाम कम करना संभव है । परंतु मानवनिर्मित आपदाओं को टालना संभव है । आपदाएँ कोई भी हो, आपदाकाल में एक-दूसरे को मदद करना यह हम सभी की नैतिक जिम्मेंदारी है ।

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण संरचना

आपदा प्रबंधन संदर्भ में प्रशासकीय स्तर पर प्राधिकरण की संरचना की है । राष्ट्रीय स्तर से गाँव स्तर तक आपदाएँ प्रबंधन अतंर्गत नियंत्रण तथा निवारण का कार्य कैसे चलता यह निम्न प्रवाह सारणी में दर्शाया है । हमारे देश में आपदा - प्रबंधन कानून, 2005 से लागू किया है ।

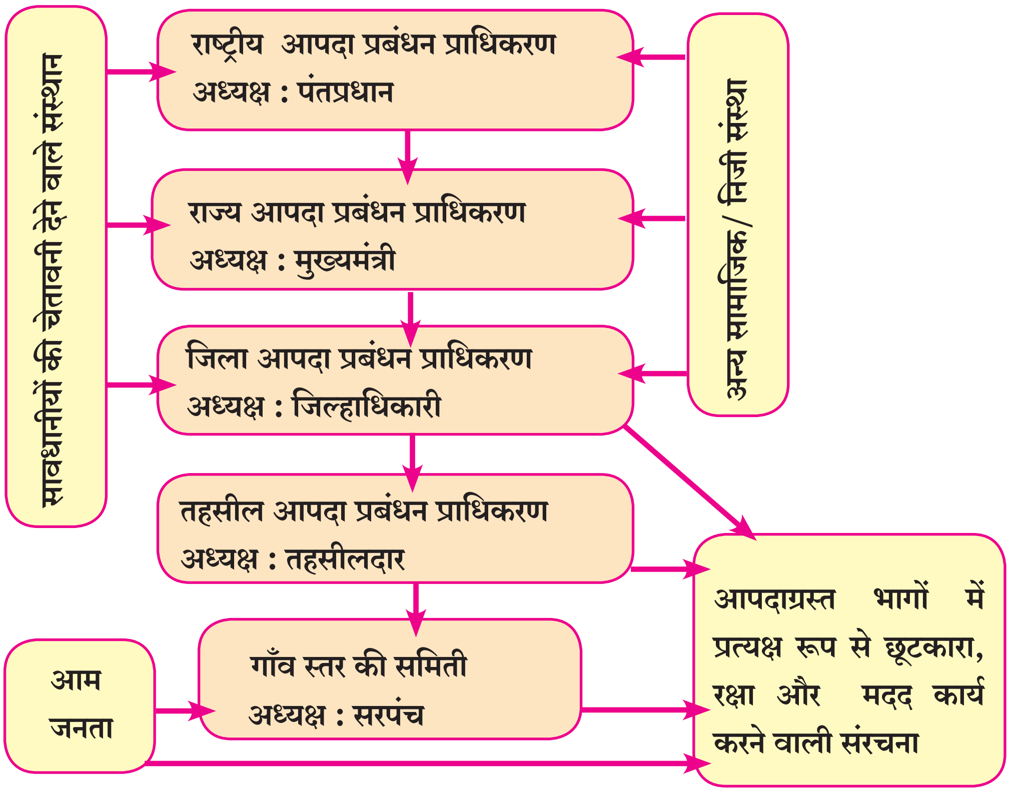

जानकारी प्राप्त कीजिए ।

जिलाधिकारी कार्यालय या तहसील के कार्यालय को भेंट देकर आपदा- निवारण कार्य की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

जिला आपदा प्रबंधक प्राधिकरण : जिल्हास्तर आपदा प्रबंधन और आपदा- निवारण योजनाओं की परिपूर्णता के लिए जिलाधिकारी जिम्मेंदार होते हैं । समन्वयक हो तो योग्य निर्देश देना, कार्यान्वयन करना और कार्यान्वयन तथा उससे प्राप्त जानकारी की रिपोर्ट लेते रहना, नियंत्रण रखना ऐसे सभी कार्यों के लिए उचित नियोजन करने का कार्य वे करते है । प्रत्येक जिले की प्रत्येक प्रकार की आपदाओं के लिए उचित योजनाएँ बनाकर राज्यस्तर पर उन्हें अनुमोदित करवाना, ये जिम्मेंदारियाँ भी जिलाधिकारी की होती हैं ।

जिलानिहाय आपदा नियंत्रण कक्ष : आपदाओं के आघात पश्चात अथवा इनकी पूर्वसूचना मिलते ही जिला नियंत्रण कक्ष की स्थापना की जाती है । आपदाओं संबंधी विविध समीता, जानकारी और अतिरिक्त मदद के लिए और निरंतर जाँच करने के लिए ये केंद्र, राज्य के विभिन्न घटकों से उदा. भूसेना, वायुसेना, नौसेना, दूरसंचार, यातायात, पॅरामिलिटरी फोर्सेस इन से निरंतर संपर्क में रहते हैं । जिले के स्वयंसेवक संगठन को एकत्रित कर आपदा निवारण कार्यों में उनका उपयोग करना यह जिम्मेंदारी नियंत्रण कक्ष की होती है ।

इंटरनेट मेरा मित्र

आपदा प्रबंधन कार्य करने वाले आंतरराष्ट्रीय संगठनों के कार्य संबंधी अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए ।

1. United Nations Disaster Relief Organization
2. United Nations Centre for Human Settlements
3. Asian Disaster Reduction Centre.
4. Asian Disaster Preparedness Centre.
5. World Health Organization.
6. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

कौन क्या करता है ?

राष्ट्रीय आपदा प्रतिसाद दल की स्थापना आपदा प्रबंधक कानून, 2005 नुसार हुई है । इस दल के विभाग सैन्य दल में कार्यरत है । संपूर्ण देश में 12 विभाग कार्यरत हैं । इनका मुख्य कार्यालय दिल्ली में स्थित होकर हर राज्य में सैन्य दल के माध्यम से ये कार्यरत है । महाराष्ट्र में केंद्रीय आरक्षित दल के माध्यम से राष्ट्रीय आपदा प्रतिसाद दल का कार्य शुरू है । इस दल के जवानों ने देश में आने वाले तूफान, कगार ढ़हना, इमारत गिरना जैसे अनेक आपदाओं का निवारण और रक्षा करने का बड़ा कार्य किया है ।

संकेतस्थल : www.ndrf.gov.in

बताओ तो

1. प्रथमोपचार किसे कहते हैं ?
2. आपदाओं में जख्मी हुए आपदाग्रस्त लोगों को प्रथमोपचार कैसे देना चाहिए ?

प्रथमोपचार और आपत्कालीन कृती

पिछली कक्षा में आपने आपदाओं में जख्मी होने के पश्चात कौन-कौन से प्रथमोपचार करने है इनकी जानकारी ली है । अपनी कक्षा के सहकारी आसपास के लोग किसी ना किसी आपदा का शिकार हो जाते हैं, उनको चोट लगती है, ऐसे समय में आपने प्राप्त की हुई जानकारी का उपयोग करना उनकी दृष्टि से लाभदायक होता है ।

कभी कभी हमारी असावधानियों से भी आपदाएँ आती हैं । परिसर में रहते वक्त आगे दिए हुए कुछ चिह्न दिखाई देते हैं । ऐसे चिह्न खतरों को टालने के लिए अत्याधिक उपयुक्त होते हैं ।

10.2 चिह्न

सोचिए तो नीचे आपदाओं के कुछ चित्र दर्शाए हैं । इस समय कौन-सी प्राथमिक सावधानी बरतेंगे ?

अ ब क

10.3 विविध आपदा

निरीक्षण कीजिए नीचे दिए गए चित्र किस संदर्भ में है, वह बता कर प्रत्येक आपदा व्यवस्थापन के संदर्भ में महत्व स्पष्ट कीजिए । ऐसी अन्य कौन-सी कृतियाँ हैं ?

अ आ इ ई उ ऊ

10.4 विविध कृती

आपदाकालीन परिस्थिती में आपदाग्रस्त का वहन करने के लिए झुला पद्धती, पीठ पर लेना, हाथों की बैठक ऐसी विविध पद्धतीयाँ उपयोग में लानी पडती हैं । आपदाग्रस्त की शारीरीक स्थिती कैसी है इसके अनुसार विविध पद्धतियाँ निश्चित की जाती है । दैनिक जीवन में हमें अनेक छोटी-बड़ी आपदाओं का सामना करना पडता है । दुर्घटना होना, भीड स्थान पर भगदड मचना, झगडे-बखेड़े से हानि पहुँचना, बिजली का धक्का लगना, जलना, उष्माघात होना, सर्पदंश, श्वानदंश, विद्युत वहन में शॉर्ट सर्किट होना, संक्रामक बिमारी फैलना ऐसी आपदाएँ अपने घर, विद्यालय, हम जहाँ रहते है, वहाँ होती है । इस आपाद काल में अपनी भूमिका निश्चित कौन-सी होनी चाहिए? अचानक उत्पन्न आपाद के कारण आपदाग्रस्त को वैद्यकीय उपचार मिलने के पूर्व तत्काल कोई उपचार मिलना आवश्यक होता है । ऐसे समय प्रथमोपचार उपयुक्त सिद्ध होता है ।

तालिका पूर्ण कीजिए प्रथमोपचार के संदर्भ में निम्न तालिका पूर्ण कीजिए ।

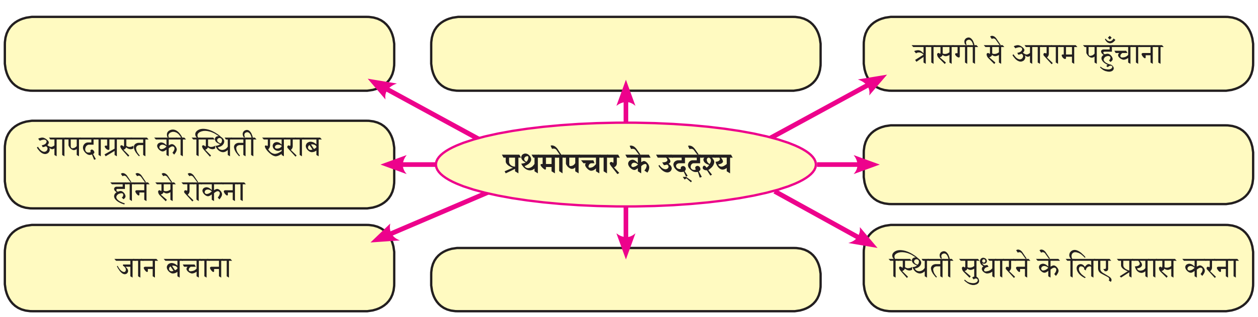

प्रथमोपचार पेटी (First-aid kit)

प्रथमोपचार के लिए आवश्यक सामग्री हमारे पास होना आवश्यक होता है । प्रथमोपचार पेटी में से सामग्री उपलब्ध होती है । आप भी प्रथमोपचार सामग्री की पेटी तैयार कर सकते हैं । प्रथमोपचार के समय आवश्यकतानुसार स्थानिक परिस्थिती में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करना महत्वपूर्ण है ।

इसकी जानकारी लीजिए ।

आप के गाँव के वैद्यकीय अधिकारी/डाक्टर की भेंट लेकर प्रथमोपचार किस प्रकार करना चाहिए इसकी जानकारी प्राप्त कीजिए ।

प्रथमोपचार पेटी के लिए आवश्यक सामग्री

1. भिन्न-भिन्न आकार की बँड़ेड़ पट्टियाँ
2. जख्म पर बाँधने के लिए जाली की पट्टी
3. त्रिकोणीय और गोल लपेटने वाले बँड़ेजेस
4. चिकित्सकीय उपचार के लिए उपयोग में लाए जानेवाला कपास
5. रबर के दस्ताने (२ जोड़ीयाँ)
6. स्वच्छ तथा सूखे कपड़े के टुकड़े
7. साबुन
8. अँटीसेप्टिक (ड़ेटॉल और सॅव्हलॉन)
9. सेफ्टी पिनें
10. ब्लेड़
11. छोटा चिमटा
12. सूई
13. बँड़-एड़ (पट्टियाँ)
14. छोटी टॉर्च
15. कैंची
16. चिपक पट्टी
17. थर्मामीटर
18. पेट्रोलियम जेली

बताओ तो

क्या आपके विद्यालय में कभी अग्निशमन विभाग के कर्मचारियों द्वारा आपदा-प्रबंधन के अंतर्गत प्रात्यक्षिक किया है ? उसमें आपने क्या -क्या देखा ?

अभिरूप सराव (Mock drill)

मॉक ड्रिल ये आपदाओं के स्थिती में तुरंत और कम से कम समय में तैयारी करके स्थिती का मापन करने का एक साधन है । किसी भी आपदा से संबंधित प्रतिसाद प्रक्रिया को जाँचने के लिए आपदा आने के पश्चात की स्थिती का आभासी संचलन करते हैं । इस समय आपदा निवारण करने के लिए नियोजनानुसार की गई सभी कृतियाँ सफल होंगी या नहीं यह देखने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ती उन को दी गई कृति करते है । इसमें हम आपदा-निवारण के लिए निर्माण की गई यंत्रणा कितनी सक्षम है यह देख सकते हैं ।

अग्निशमन विभाग के जवानों द्वारा ‘आग लगना’, इस आपदा पर आधारित बचाव कार्य का अभिरूप सराव (Mockdrill) अनेक विद्यालयों मे लिया जाता है । इस में आग बुंझाने संबंधी किसी मंजिल पर अटके हुए नागरिक को बाहर निकालने के बारे में, कपड़ों में आग लगे नागरिक को कैसे बचाएँ ये कृतियाँ दिखाई जाती हैं । उसी प्रकार आग के प्रभाव से कपड़ो के जलने पर कृति दिखाई जाती है । पुलिस विभाग और विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओंद्वारा भी ऐसे उपक्रम किए जाते हैं ।

अभिरूप सराव के उद्देश्य

(Aim of Mock drill)

1. आपदाओं को दिए गए प्रतिसादों का मूल्यमापन करना ।
2. आपदा नियंत्रण विभाग में समन्वय सुधारना ।
3. स्वयं की कार्यक्षमताओं को पहचानना ।
4. आपदाओं को तीव्र प्रतिसाद देने की क्षमता को बढ़ाना ।
5. नियोजित कृतियों की संकल्पना की जाँच करना ।
6. आनेवाली त्रुटीयाँ और खतरों की संभावनाओं को पहचानना ।

इंटरनेट मेरा मित्र

यू ट्यूब (You tube) से अग्निप्रतिबंधक Mockdrill का व्हिड़िओ देखिए । आपके मित्र, रिश्तेदारों को भेजिए ।

इसे सदैव ध्यान में रखिए

1. विद्‌यालय में सीढ़ियों से आते समय भीड़भाड़ मत करो एकदूसरे को मत ढ़केलो ।
2. महत्व के दूरध्वनी क्रमांक ध्यान में रखिए और आवश्यक हो वहाँ पर उपयोग कीजिए । उदा. पुलिस 100, अग्निशमन दल 101, आपदा नियंत्रण कक्ष 108, रुग्णवाहिका 102 आदि ।
3. रास्ता पार करते समय दाएँ तथा बाएँ ओर देखिए । गाड़ीयाँ नहीं आ रही है क्या निश्चित किजीए । यातायत के नियमों का पालन कीजिए।
4. लावारिस वस्तुओं को हात मत लगाओ । अफवाहों को मत फैलाओ ।
5. भीड़वाले जगह पर गड़बड़ मत करो ।

स्वाध्याय

1. **सारणी पूर्ण कीजिए।**

(वाहन दुर्घटना, कगार ढ़हना, दावानल, चोरी, दंगल, युद्‌ध, महामारी, पानी की कमी, टीड्डी दल का हमला, वित्त मंदी, बाढ़, अकाल)

आपदाएँ	लक्षण	परिणाम	उपाय योजनाएँ

2. **टिप्पणी लिखिए ।**

अ. आपदा- प्रबंधन प्राधिकरण

आ. आपदा- प्रबंधन प्राधिकरण का स्वरूप

इ. अभिरूप सराव

ई. आपदा- प्रबंधन कानून, 2005

3. **निमलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।**

अ. आपदाओं की घटना के पश्चात जिला आपदा-नियंत्रण केंद्र की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

आ. दूसरे महायुद्‌ध के बाद मानवी आपदाओं में वृद्‌धि होने के कारण बताइए ।

इ. आपदा- प्रबंधन के उद्‌देश्य कौन से है ?

ई. प्रथमोपचार का प्रशिक्षण लेना क्यों आवश्यक है?

उ. आपदाग्रस्त रोगी का वहन करने के लिए कौन कौन -सी पद्‌धतियों का उपयोग करते है ?

4. **आपदा- प्रबंधन प्राधिकरण संरचनानुसार आपके विद्‌यालय के संदर्भ में संरचना तैयार कीजिए ।**

5. **आपने अनुभव की दो आपदाओं के कारण, परिणाम तथा की गई उपाययोजनाओं के बारे में लिखिए ।**

6. आपके विद्‌यालय के लिए आपदापूर्व प्रबंधन संबंधी किन–किन सी बातों की आप जाँच करेंगे? क्यों ?

7. आपादाओं के प्रकार पहचानिए और परिणाम स्पष्ट कीजिए ।

अ. आतंकवाद आ. जमिन की धूप

इ. पीलिया ई. दावानल

उ. अकाल ऊ. चोरी

8. नीचे कुछ चिह्न दिए हैं, उनके बारे में स्पष्टीकरण लिखिए । इन चिह्नों को दुर्लक्षित करने पर कौन –कौन सी अपदाएँ आ सकती है ?

9. ऐसा क्यों कहा जाता है यह स्पष्ट कीजिए ।

अ. अभिरूप सराव (Mock drill) उपयुक्त होता है ।

आ. प्रभावी आपदा प्रबंधन भविष्य के लिए सुसज्जता निर्माण करता है ।

10. निम्नलिखित सारणी पूर्ण कीजिए ।

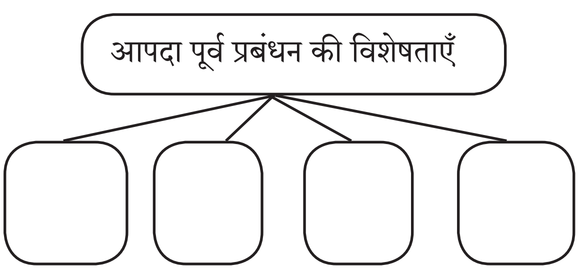

11. नीचे कुछ आपदाओं के चित्र दिए हैं । यदि आप पर ऐसी आपदाएँ आई तो आपका आपदापूर्व प्रबंधन और आपदा पश्चात प्रबंधन किस प्रकार रहेगा ?

अ)

आ)

इ)

ई)

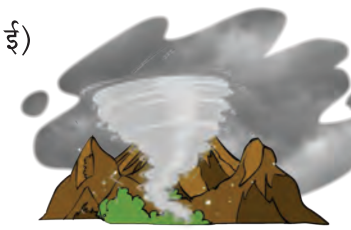

उपक्रम :

1. कक्षा के छात्रों द्‌वारा कक्षा 9 वी के पाठ्‌युस्तक से पृष्ठ क्र. 106 पर दी गई कृति अन्य कक्षाओं के छात्रों को दिखाइये । इसी का चित्रीकरण करके अन्य को भेजिए ।

2. अभिरूप सराव (Mock drill) के प्रात्यक्षिक दर्शाने के लिए आपके विद्यालय के छात्रों का एक समूह तैयार करके प्रात्यक्षिक अन्य कक्षाओं के छात्रों को दिखाइये ।

KKXEB9